मंथन-7

हिंदी में रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला

चारा - बेचारा | मानसून मैजिक | चारे की खोज में

CSE डाउन टू अर्थ VIKAS SAMVAD

चारे की अर्थव्यवस्था पर संकट

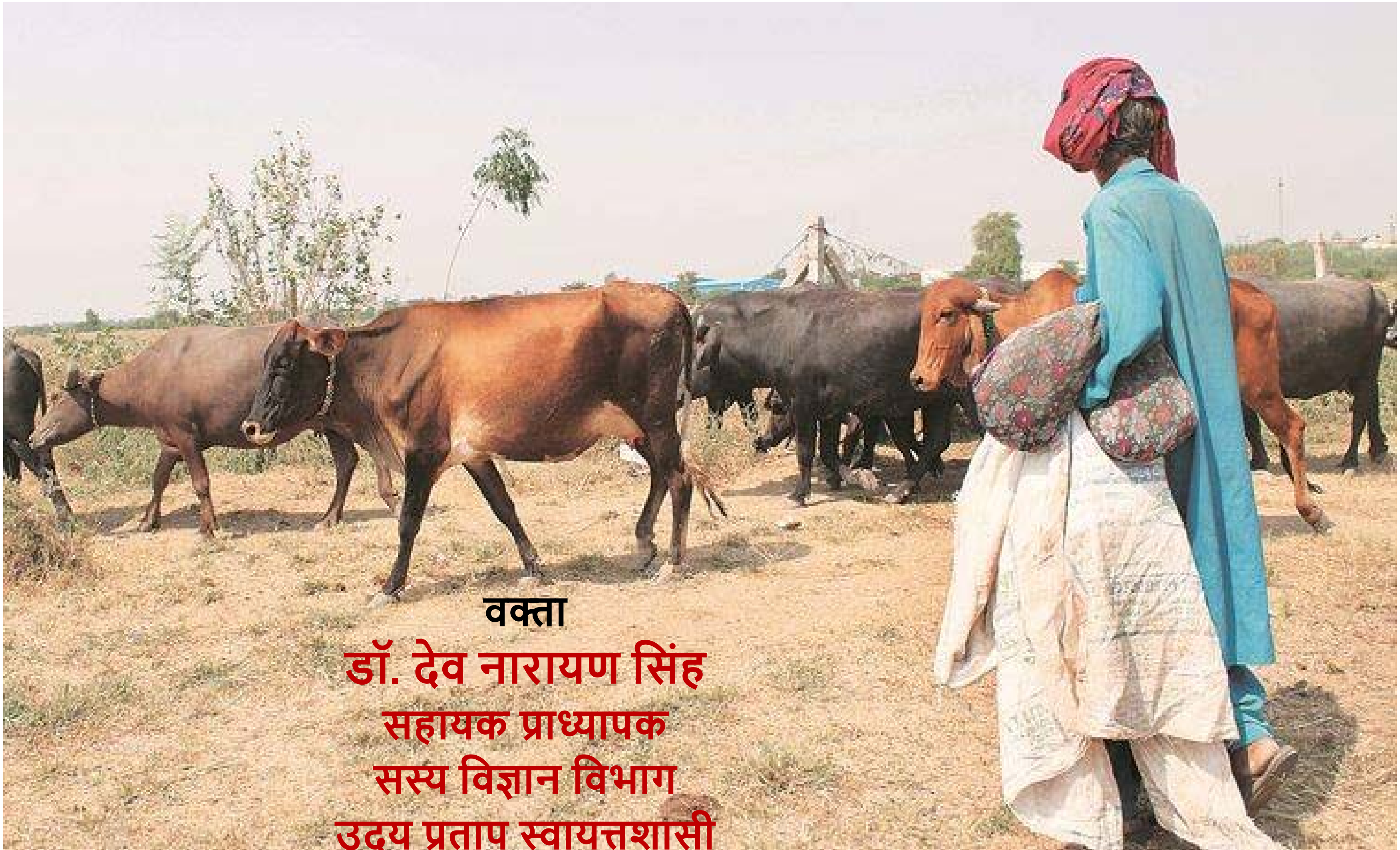

वक्ता

डॉ. देव नारायण सिंह

सहायक प्राध्यापक
सस्य विज्ञान विभाग
उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय, वाराणसी

इस विषय पर मंथन आज क्यों?

गाँवकनेक्शन HOME GAON RADIO WATCH LATEST NEWS READ

Somu Anand 17 Jun 2022

WhatsApp Facebook Twitter + ज़्यादा 14

हिन्दुस्तान

सर्च करें

होम न्यूज़ ब्रीफ फोटो वीडियो देश राज्य CWG क्रिकेट मनोरंजन करियर विदेश धर्म बिजनेस गैजेट्स ऑटो लाइ

सेक्स रैकेट: कॉलेज के लिए निकली थीं लड़कियां, बॉयफ्रेंड के साथ धराईं

जुमे की छुट्टी पर JDU-BJP में तकरार, कुशवाहा बोले- माहौल बिगाड़ रहे

आरसीपी सिंह बोले- ललन बाबू से कोई विवाद नहीं, नीतीश सरकार अच्छा कर रही

नीतीश सरकार किसानों को दे रही प्रति एकड़ 600 रुपये, आज से करें आवेदन

बिहार के समस्तीपुर में पुलिस थाने में एक युवक द्वारा आत्महत्या की घटना

पशुओं के चारे पर महंगाई की मार, पशुपालक लाचार

जिले में पशुओं के आहार पर भी मंहगाई की मार पड़ी है। पशु चारा की कीमतों में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। पूर्व में 16 से 18 सौ रुपये प्रति 50 किग्रा मिलने वाली सरसों व तीसी की खल्ली 22 से 23...

हिन्दुस्तान

पशुओं के चारे पर महंगाई की मार, पशुपालक ला

डाउन टू अर्थ

-19 प्रदूषण कृषि स्वच्छता जल विज्ञान DownToEarth SIGN IN SUBSCRIBE

हम उस विज्ञापन को दोबारा नहीं दिखाने का प्रयास करेंगे

दो से तीन गुणा महंगा बिक रहा है भूसा, राज्य सरकारें लगा रही हैं प्रतिबंध

बुआई के साथ-साथ गेहूं का उत्पादन कम हुआ है, जिसके चलते देश में भूसे का संकट खड़ा हो गया है

By Arvind Shukla
On: Friday 13 May 2022

डाउन टू अर्थ

कोविड-19 प्रदूषण कृषि स्वच्छता जल विज्ञान DownToEarth SIGN IN SUBSCI

विज्ञापन में कवर सामग्री | यह विज्ञापन कई बार देखा | विज्ञापन अनुचित था | इस विज्ञापन में रुचि नहीं

बेजुबानों के भोजन पर भी महंगाई की मार, मवेशी बेचने पर मजबूर किसान

आज से एक-डेढ़ दशक पहले की बात करें तो अधिकांश पशुपालक साल के तीन-चार महीने जानवरों को धान के पुआल की कट्टी ही खिलाते थे। लेकिन आज पूर्णतया भूसे पर निर्भर रहते हैं।

On: Wednesday 08 June 2022

HR BREAKING NEWS

Home हरियाणा ऑटो-वर्ल्ड अपराध खेतीबाड़ी नौकरियां राशिफल सरकारी योजना राज्य बिजने

Home » Agriculture

अब तूड़ी (पशुचारे) पर महंगाई की मार, रेट हुए डबल

TODAY HARYANA NEWS: महंगाई की मार अब पशुओं के चारे पर भी पड़ने लगी है। एक तरफ घरेलू सामान के रेट भी आसमान छू रहे हैं। वहीं अब पशुचारे पर भी महंगाई की तलवार लटकने लग गई है।

By Sudhir Sheoran | Thu, 21 Apr 2022

Costly fodder set to raise prices of milk, eggs

इंग्लिश
SPOKEN ENGLISH COURSE
1800-309-3209
क्लिक करें

Shuru kren aur bina limit ke 24/7 trade karen
AD Olymp Trade
INSTALL NOW

This story is from April 29, 2022

Rajasthan: Heatwave triggers fodder crisis, prices up from Rs 5 to Rs 18 per kg

TNN | Updated: Apr 29, 2022, 08:44 IST

भरतपुर में अगले दो महीने तक का ही चारा उपलब्ध, किसानों को झेलना पड़ सकता है चारा संकट

Published on: Jun 24, 2022, 10:16 AM IST

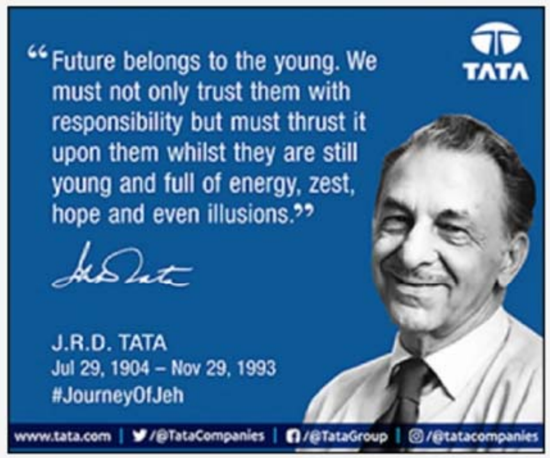

KERALA

Rising feed price leaves dairy farmers in distress

Navamy Sudhish

KOLLAM APRIL 03, 2022 19:03 IST
UPDATED: APRIL 03, 2022 19:03 IST

उत्तर प्रदेश में गेहूँ के भूसे की कीमतें पिछले एक दसक में

वर्ष	मूल्य (रु. प्रति कुन्तल)
2012-13	350-475
2013-14	400-560
2014-15	435-515
2015-16	400-540
2016-17	408-520
2017-18	465-588
2018-19	565-611
2019-20	600-810
2020-21	654-775
2021-22	588-1016
2022-23	900-1400

भारत में पशुधन आबादी एक नजर में

क्र. सं.	पशुधन प्रजाति	आबादी (करोड़ में)		प्रतिशत बदलाव	वैश्विक पशुधन आबादी में स्थान
		2012 में	2019 में		
01	गोवंश	19.09	19.25	0.8	दूसरा
02	भैंस	10.87	10.98	1.1	प्रथम
	कुल मवेशी (मिथुन और याक सहित)	29.98	30.28	1.0	प्रथम
03	भेंड	6.507	7.43	14.1	तीसरा
04	बकरी	13.52	14.89	10.1	दूसरा
05	सूअर	1.03	0.91	-12.03	
06	ऊंट	0.040	0.025	-37.05	दसवाँ
	कुल पशुधन	51.21	53.58	4.64	प्रथम
	कुल कुक्कुट	72.92	85.18	16.8	सातवाँ

पशु आहार पिरामिड

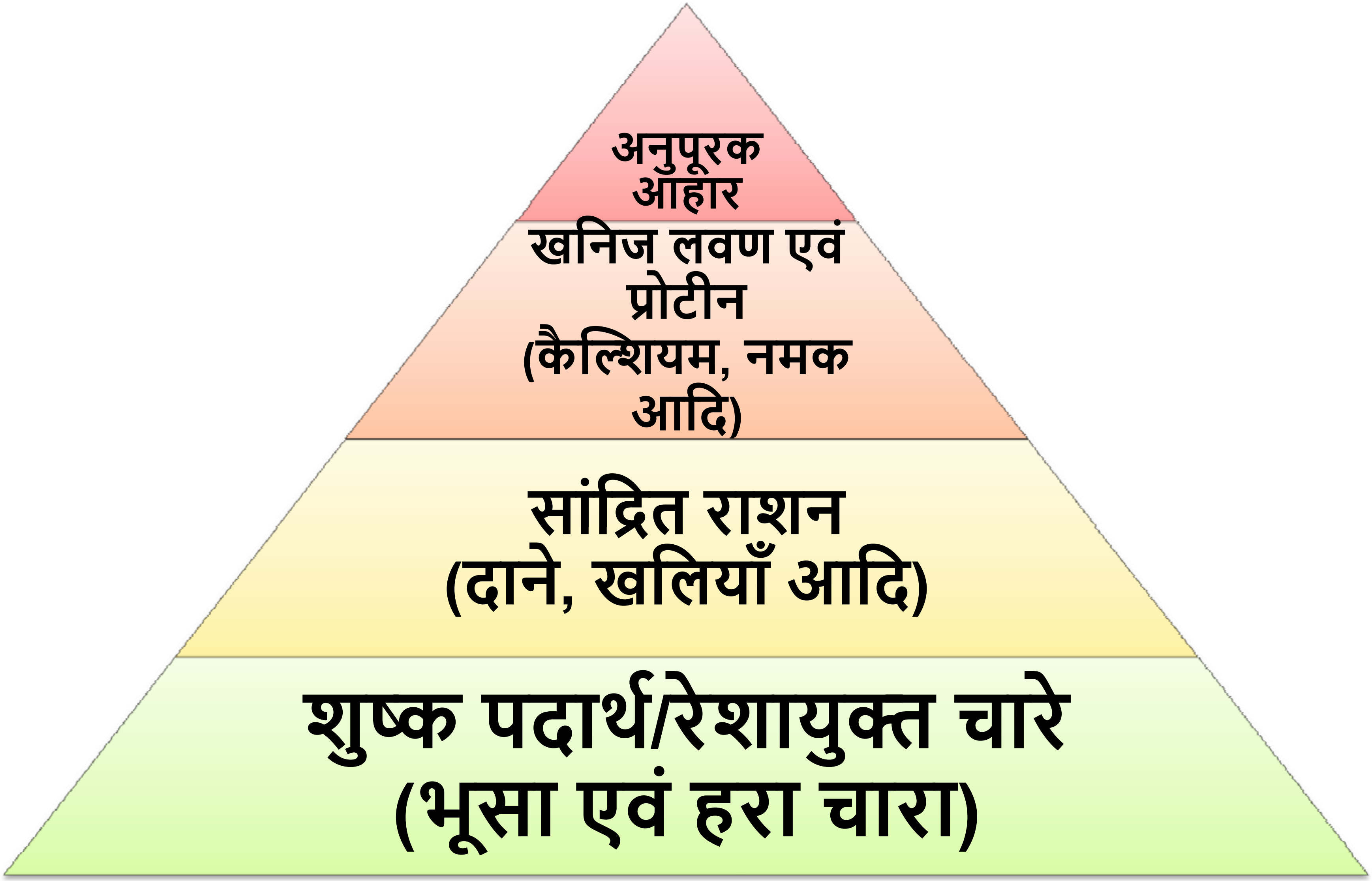

अनुपूरक आहार
खनिज लवण एवं प्रोटीन (कैल्शियम, नमक आदि)
सांद्रित राशन (दाने, खलियाँ आदि)
शुष्क पदार्थ/रेशायुक्त चारे (भूसा एवं हरा चारा)

चारे की गणना

- देसी गाय को औसतन 2 से 2.5% शुष्क पदार्थ की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। (2% सूखी गाय के लिए तथा 2.5% दुधारू एवं गर्भवती गाय के लिए)
- क्रॉस नस्ल की गायों और भैंसों को औसतन 2.5 से 3.0% शुष्क पदार्थ की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। (2.5% सूखी गाय/भैंस के लिए तथा 3.0% दुधारू एवं गर्भवती गाय/भैंस के लिए)
- कुल शुष्क पदार्थ आवश्यकता में से लगभग दो-तिहाई सूखे चारे (भूसे, पुआल आदि) से और शेष एक-तिहाई हरे चारे से पूरी की जानी चाहिए ।

हमरे देश में चारे की माँग एवं आपूर्ति

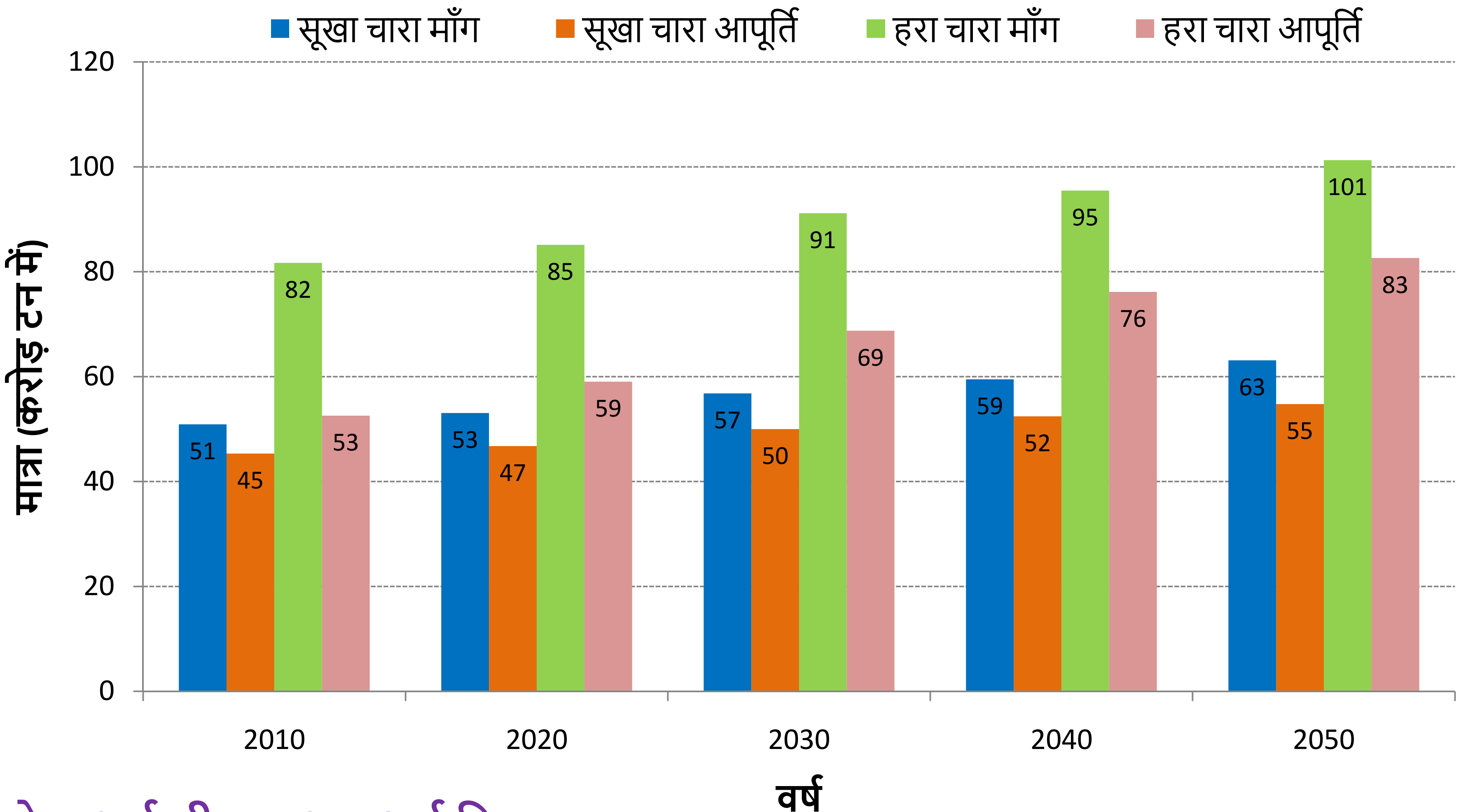

स्रोत: आई.जी.एफ.आर.आई विजन-2050

माँग एवं आपूर्ति के सापेक्ष चारे की उपलब्धता

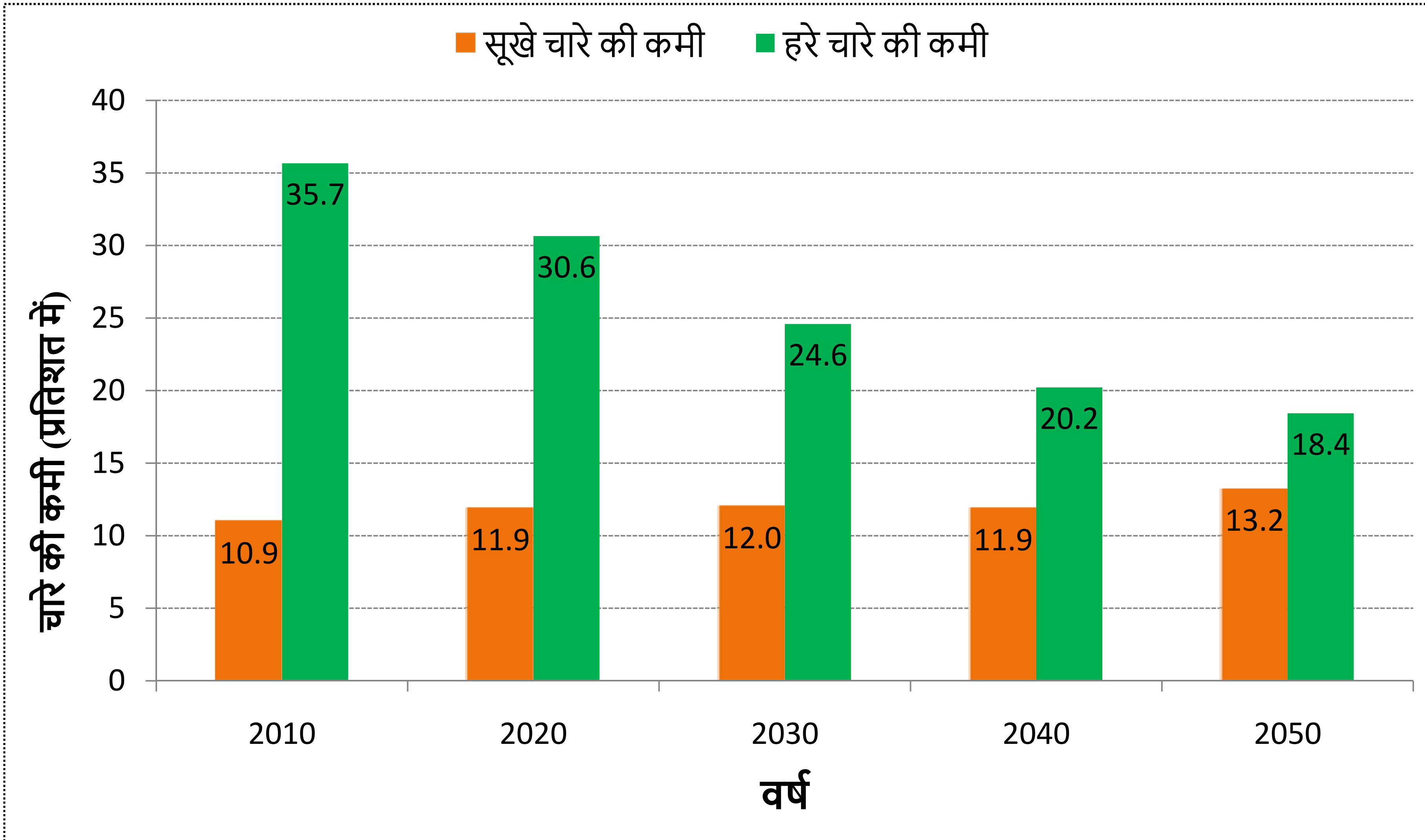

स्रोत: आई.जी.एफ.आर.आई विजन-2050

वर्तमान चारा संकट के कारण

1) गेहूं के रकबे में कमी
2) गेहूँ एवं धान की बौनी किस्मों की बढ़ती लोकप्रियता
3) फसल कटाई हेतु मशीनों का प्रयोग
4) जलवायु परिवर्तन और मौसम की मार
5) धान के पुआल की उपलब्धता एवं चारे के रूप में प्रयोग में कमी
6) भूसे के औद्योगिक उपयोग
7) बढ़ती पशुधन आबादी
8) सूखे चारे पर निर्भरता अधिक
9) चरागाहों के रूप में प्रयोग होने वाली सार्वजानिक भूमियों की कमी
10) सरकारी नीतियों में चारा उत्पादन की उपेक्षा
11) उच्च उत्पादन क्षमता वाले गुणवत्तापरक बीजों की कमी

गेहूं के रकबे में कमी

गत वर्ष (2020-21) की तुलना में इस वर्ष (2021-22) लगभग 19 लाख हेक्टेयर कम क्षेत्रफल पर गेहूं की फसल उगाई गई।

1) घटता भूमिगत जल स्तर
2) बढ़ती लागत
3) दलहन एवं तेल की कीमतों में बढ़ोत्तरी
4) दलहन एवं तिलहन की खेती को सरकार द्वारा प्रोत्साहन

गेहूँ एवं धान की बौनी किस्मों की बढ़ती लोकप्रियता

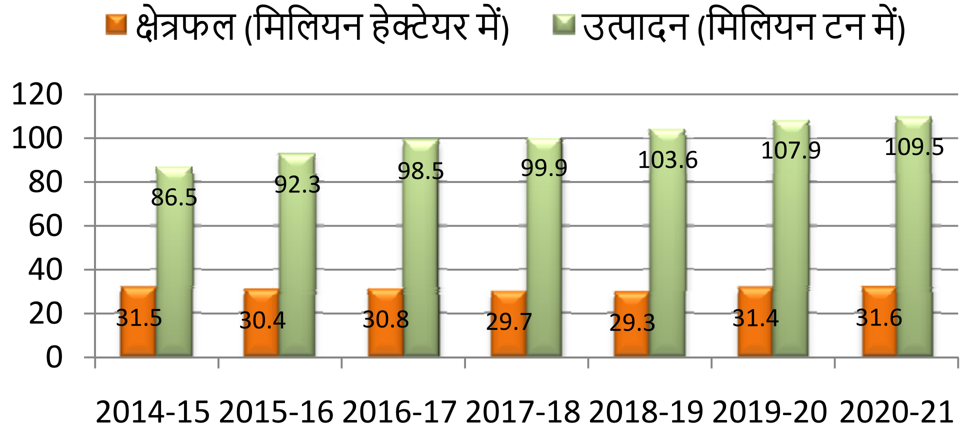

विगत कुछ वर्षों में गेहूँ का क्षेत्रफल एवं उत्पादन

पिछले एक दसक में क्षेत्रफल में वृद्धि न होने के वावजूद उत्पादन बढ़ रहा है। **कैसे?**

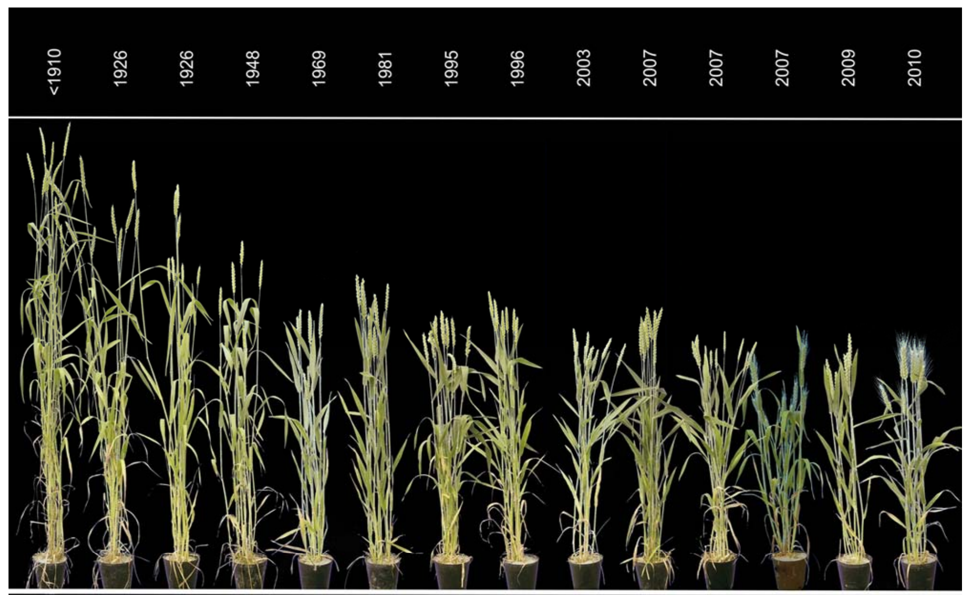

फसल कटाई हेतु मशीनों का प्रयोग

हाथ से फसल काटकर थ्रेसर से मड़ाई करने की तुलना में कंबाइन से कटाई-मड़ाई करने पर लगभग आधा ही भूसा प्राप्त होता है

धानः पंजाब, हरियाणा- 50-60% और तमिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश- 70-80%

गेहूंः पंजाब और हरियाणा- 85-90 %

जलवायु परिवर्तन और मौसम की मार

नासा द्वारा दिसंबर 2020 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 140 वर्षों में 2010 से 2019 का दशक सबसे गर्म दशक था।

- पिछले 20 वर्षों में वैश्विक तापमान 0.6 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है।
- समुद्र के स्तर में 3 इंच की वृद्धि हुई है ।
- चरम मौसम की घटनाओं (Extreme weather events) में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि से गेहूँ की पैदावार में 10-20% की कमी आ सकती है।

Temperature rise since 1850

Global mean temperature change from pre-industrial levels, °C

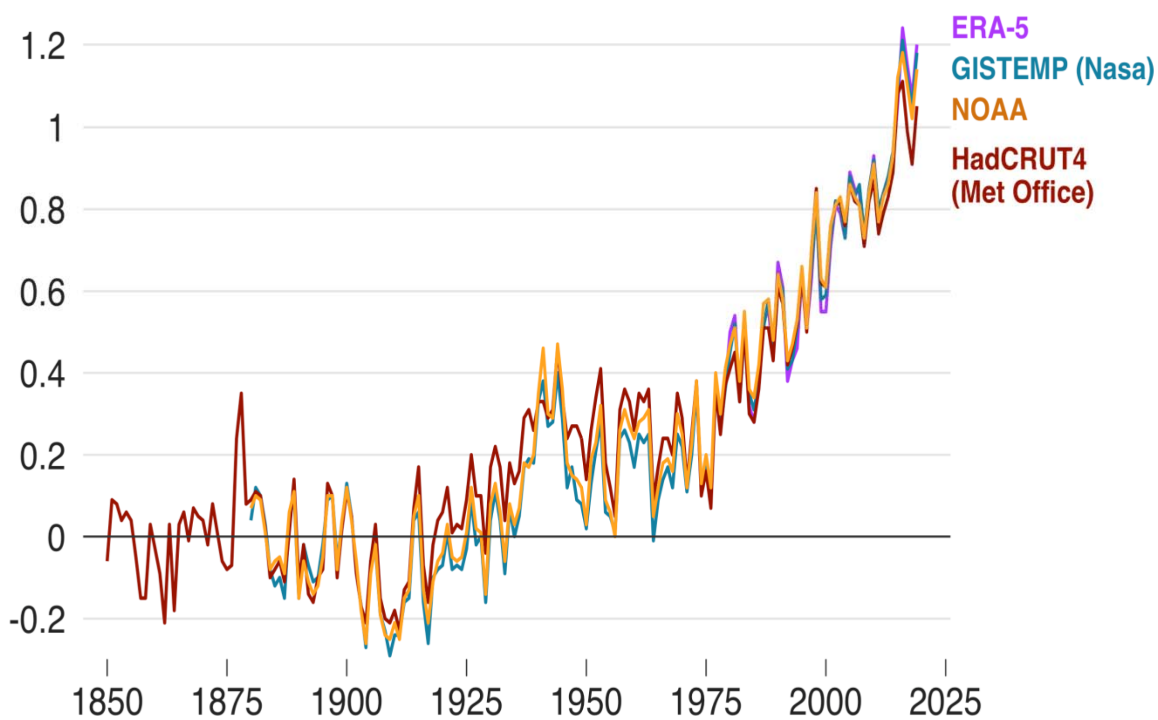

Source: Met Office

BBC

डाउन टू अर्थ

धान के पुआल की उपलब्धता एवं घटता चारे के रूप में उपयोग

- धान की फसल की मशीनों से कटाई
- धान की बौनी प्रजातियों की खेती
- धान के रकबे में कमी
- द ट्रिब्यून में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के आठ एनसीआर जिलों में धान का कुल रकबा वर्ष 2021 के दौरान पिछले वर्ष (2020) की तुलना में 7.72 प्रतिशत कम रहा, जबकि पुआल का उत्पादन 12.42 कम रहा।
- बड़े किसान धान के पुआल को काटकर चारे के रूप में प्रयोग करने की बजाय खेत में जलाना अधिक पसंद करते हैं ।

भूसे के औद्योगिक उपयोग

- ईंट भट्ठे में ईंधन के रूप में
- कागज एवं कार्डबोर्ड बनाने में
- इथेनॉल बनाने में (1996 में डाउन टू अर्थ इंग्लिश ने इसकी उपयोगिता पर लेख प्रकाशित किया था)

हिन्दुस्तान

सर्च करे

होम न्यूज़ ब्रीफ फोटो वीडियो देश राज्य CWG क्रिकेट मनोरंजन करियर विदेश धर्म बिजनेस गैजेट्स ऑटो

ट्रेंडिंग न्यूज़

हाईकोर्ट का आदेश- गुरिल्लाओं को तीन महीने में नौकरी दे सरकार

भर्ती घोटाला: 2 महीने के लिए बैंकॉक गया मास्टरमाइंड, STF की रडार पर था

हिंदी न्यूज़ ‣ उत्तराखंड ‣ रुद्रपुर ‣ डीएम ने भूसे के औद्योगिक प्रयोग पर रोक के आदेश किये पारित

डीएम ने भूसे के औद्योगिक प्रयोग पर रोक के आदेश किये पारित

सितारगंज। जिला मजिस्ट्रेट युगल किशोर पंत ने धारा 144 के तहत सूखा भूसा,ठूंठ, नरई, पुआल, गन्ने की पत्तियां अगोला व सूखी पत्तियों पर जनपद सीमांतर्गत...

बढ़ती पशुधन आबादी

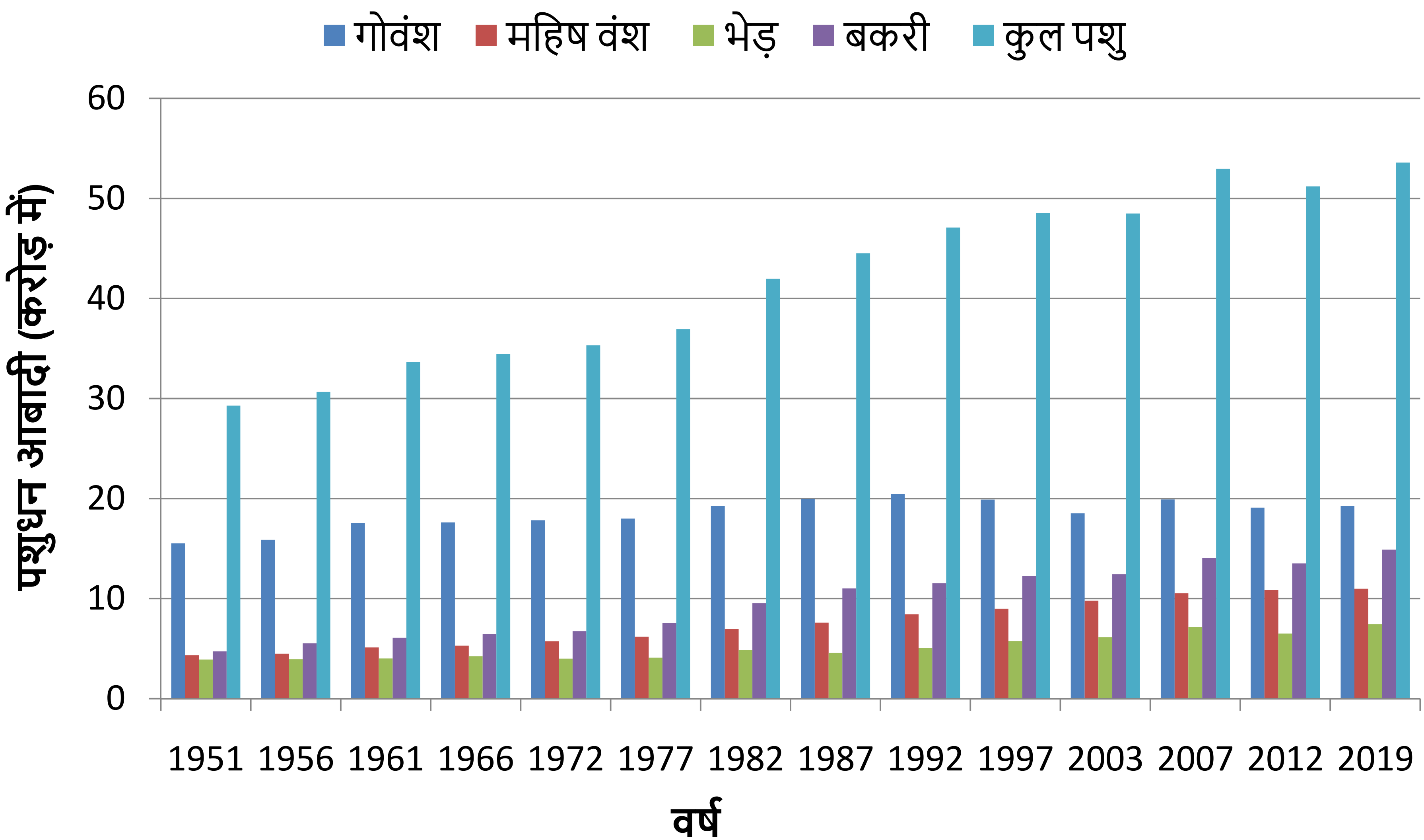

गोवंश
महिष वंश
भेड़
बकरी
कुल पशु
पशुधन आबादी (करोड़ में)
0
10
20
30
40
50
60
1951
1956
1961
1966
1972
1977
1982
1987
1992
1997
2003
2007
2012
2019
वर्ष

सूखे चारे पर निर्भरता अधिक

- विश्व की लगभग 20% पशुधन आबादी वाले देश में चारे की खेती मात्र 4.5% कृषि योग्य भूमि पर ही होना
- खद्यान एवं नकदी फसलों के उत्पादन पर कृषकों की रूचि अधिक होना
- हरे चारे का संगठित बाजार ढांचा उपलब्ध ना होना
- हरे चारे की भण्डारण अवधि बहुत कम होना
- चरागाहों के रूप में प्रयोग होने वाली सार्वजानिक भूमियों की कमी

सरकारी नीतियों में चारा उत्पादन की उपेक्षा

- सकल घरेलु उत्पाद में 15.4% का योगदानएवं 62% से अधिक आबादी को आजीविका करने वाले प्रदान कृषि क्षेत्र के लिए मात्र 3.1% का बजट प्रावधान
- सकल घरेलु उत्पाद में 4.11% का योगदान करने वाले पशुपालन क्षेत्र के लिए 0.1% से भी कम का बजट प्रावधान
- राष्ट्रीय या प्रदेश स्तर पर कोई समग्र चारा नीति नहीं
- राष्ट्रीय या प्रदेश स्तर पर चारे का कोई सगठित बाजार नहीं

उच्च उत्पादन क्षमता वाले गुणवत्तापरक बीजों की कमी

- हरित क्रांति के केंद्र में केवल खाद्यान्न फसलें (धान गेहूँ) ही रहीं
- आजकल तिलहन एवं दलहनी फसलों पर सरकार की अधिकांश नीतियाँ केन्द्रित हैं
- चारे की फसलें आज भी उपेक्षित ही हैं –
- चारे की फसलों में विभिन्न पारिस्थितकीय क्षेत्रों के अनुकूल उन्नतशील किस्मों की कमी है
- समय पर उन्नत बीजों की उपलब्धता भी नहीं हो पाती
- संगठित बाजार व प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ के आभाव में प्राइवेट पूँजी निवेश की कमी

चारे की समस्या का समाधान

सरकार

किसान

वैज्ञानिक

सरकार को चाहिए कि....

- भूसे के औद्योगिक उपयोग पर प्रतिबंध लगाएँ
- भूसे के संगठित बाजार के विकास एवं नियमन हेतु नीतियाँ बनाये
- हरे चारे के उत्पादन को बढ़ावा दे
- चरागाहों के विकास हेतु उचित नीतियां बनाएं
- चारा उत्पादक किसानों को प्रोत्साहन दें

पशुपालक किसानों को चाहिए कि....

- भूसे पर निर्भरता कम करें ।
- फसल चक्र में चारे की फसलों को सम्मिलित करके हरे चारे के उत्पादन को बढ़ावा दें ।
- लघु एवं सीमांत किसान खेत की मेड़ों पर नेपियर घास जैसी चारे की बहुवार्षिक फसलें उगा कर कुछ हद तक चारे की समस्या को दूर कर सकते हैं ।
- वर्ष पर्यन्त चारे की उपलब्धता के लिये खरीफ़ में ज्वर, बाजरा, मक्का, सूडान चरी; रबी में बरसीम, जौ, जई, लुसर्न तथा ज़ायद में सूडान चरी, मक्का, एम पी चरी आदि फसलों की खेती कर सकते हैं ।

कृषि वैज्ञानिकों को चाहिए कि....

- हरे चारे की फसलों की उन्नतशील प्रजातियाँ विक्सित करें
- हरे चारे की फसलों की कम अवधि की प्रजातियों के अधिक बीजोत्पादन की तकनिकी विकसित करें
- गैर परंपरागत चारे की फसलों की उत्पादन एवं उपयोग तकनिकी विकसित करें
- गेहूँ व धान जैसी प्रमुख फसलों में अधिक भूसा उत्पादन प्रदान करने वाली उन्नत प्रजातियाँ विकसित करें ।

धन्यवाद !